

संवैधानिक वि. (तत्.) संविधान के अनुरूप, संविधान से संबंध रखने वाला, संविधान संबंधी।

संवैधानिक राजतंत्र पुं. (तत्.) 1. संविधान के अनुसार चलने वाला तंत्र या शासन जिसमें शासक और शासित के कर्तव्यों एवं अधिकारों का निर्धारण संविधान के अनुसार किया गया हो 2. ऐसा राज्याध्यक्ष जिसके अधिकार और कर्तव्य संविधान द्वारा नियमित और मर्यादित हों।

संव्यवहार पुं. (तत्.) 1. उचित, अच्छा, व्यवहार 2. एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण 3. बातचीत का विषय या प्रसंग 4. लेन-देन या व्यवहार 5. लगाव, संपर्क 6. व्यवसायी, रोजगारी, महाजन 7. लोक प्रचलित सुबोध शब्द।

संशप्त वि. (तत्.) 1. शापित, शापग्रस्त 2. प्रतिज्ञाबद्ध, बचनबद्ध।

संशप्तक पुं. (तत्.) 1. ऐसा योद्धा जिसने बिना सफल हुए लड़ाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो 2. कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक दल जिसने उक्त प्रकार से अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी परंतु वह स्वयं मारा गया (जयद्रथ)।

संशब्द पुं. (तत्.) 1. ललकार का शब्द 2. कथन, उक्ति 3. प्रशंसा, स्तुति।

संशम पुं. (तत्.) इच्छाओं का दमन काम-वासनाओं आदि से पूर्णतया मुक्त होना।

संशमन पुं. (तत्.) 1. शांत, शमन करना 2. नष्ट करना 3. एक दवा जो दोषों को घटाए-बढ़ाए बिना रोग दूर करे।

संशय पुं. (तत्.) 1. मन की दुविधा या अनिश्चयात्मकता की स्थिति, तथ्य या वास्तविकता तक पहुंचने के लिए मन की जिज्ञासापूर्ण वृत्ति, संदेह, शक 2. पड़े रहना, लेटना 3. संभावना और असंभावना का मिश्रण 4. संकट की आशंका, खतरे की संभावना काव्य. एक अर्थालंकार (संदेह अलंकार)।

संशयन वर्ग पुं. (तत्.) आयुर्वेद में रोग का प्रशमन करने वाली औषधियां जैसे- देवदारु, हल्दी, कुट आदि।

संशयवाद पुं. (तत्.) दार्शनिक क्षेत्र में जहां यह सोचा जाता है कि अब तक प्रचलित मान्यताएं सही हैं और सही नहीं भी हैं। वह ठीक भी हो सकती है और ठीक नहीं भी हो सकती, ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति संशयवाद है। Scepticism

संशयात्मक वि. (तत्.) जिसमें संशय, संदेह या दुविधा हो।

संशयात्मा पुं. (तत्.) संशय या संदेह से भरे मन का व्यक्ति, जो किसी बात को बिना संदेह के स्वीकार न करे शंकुल मन, संशयालु, संशयी।

संशयालु वि. (तत्.) हर बात में संशय या संदेह करने वाला, शक्की, संशयी, शंकाशील।

संशयित वि. (तत्.) 1. जिसके मन में संशय या संदेह हो 2. जिसके विषय में संशय या संदेह किया गया हो, संदिग्ध।

संशयिता वि. (तत्.) संशय या संदेह करने वाला, शंकालु, संशयी, शक्की।

संशयोपमा स्त्री. (तत्.) साहित्य में संशय अलंकार का एक भेद जिसमें कई वस्तुओं की समानता का उल्लेख करके संशय का भाव प्रकट किया जाता है।

संशरण पुं. (तत्.) 1. नष्ट करना, तोड़ना, चूर-चूर करना 2. किसी की शरण लेना, शरणागत होना।

संशरूक वि. (तत्.) संशरण करने वाला, भंग, भंजन करने वाला, तोड़-फोड़ करने वाला।

संशलाकन पुं. (तत्.) 1. शलाका बनाना, छड़, छड़ी, दण्ड बनाना 2. छड़ से मापन करना 3. दण्ड के साथ बांधना, कसना।

संशासन पुं. (तत्.) अच्छा शासन, सुशासन, उत्तम राज्य व्यवस्था।

संशित वि. (तत्.) 1. सान पर चढ़ाकर तेज धारदार किया हुआ 2. तत्पर, उद्यत 3. दक्ष, निपुण 4. दृढ़, पक्का।